महादेवी वर्मा

आधुनिक हिन्दी काव्य-साहित्य के अंतर्गत बहनेवाली छायावादी काव्य-धारा की चार प्रमुख विभूतियों में कवयित्री महादेवी वर्मा अन्यतम हैं। आपकी कविताओं में सर्वव्यापी परम सत्ता के पति विरहानुभूति की तीव्रता परिलक्षित होती है। इस आधार पर कृष्ण-प्रेम-दीवानी मीराँबाई के साथ तुलना करते हुए आपको **आधुनिक युग की मीराँ** कहा जाता है। अपने प्रियतम अज्ञात सत्ता के प्रति तीव्र विरहानुभूति या रहस्यानुभूति के कारण आप रहस्यवादी कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हैं। अपने काव्य को आराध्य की विरहानुभूति और व्यक्तिगत दु:ख-वेदना की अभिव्यक्ति में सीमित न रखकर महादेवी वर्माजी ने उसे लोक कल्याणकारी करुणा भाव से जोड़ दिया है। इन्हीं गुणों के कारण उनकी काव्य-रचनाएँ हिन्दी-पाठकों को विशेष प्रिय रही हैं।

कवयित्री महादेवी वर्मा का जन्म 1907 ई. को उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद में हुआ था। उनके पिता-माता गोविंद प्रसाद वर्मा और हेमरानी वर्मा दोनों उदार विचारवाले थे। छठी कक्षा तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद ही महादेवीजी का विवाह हुआ था, परन्तु वैवाहिक संबंध आगे बना नहीं रहा। आपने शिक्षा और साहित्य की सेवा में अपने को समर्पित कर दिया। प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत और दर्शन-शास्त्र के साथ बी.ए. करने के पश्चात् आपने 1933 ई. को संस्कृत में एम.ए. किया। इसके बाद उन्होंने प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या के रूप में अपने कर्म-जीवन का श्रीगणेश किया। महादेवी वर्मा ने जीवन भर शिक्षा और साहित्य की साधना की। 1987 ई. को आपका स्वर्गवास हुआ।

महादेवी वर्माजी ने गद्य और पद्य दोनों शैलियों में सहित्य की रचना की है। उनकी प्रमुख काव्य-रचनाएँ हैं -'**नीहार**', '**रश्मि**', '**नीरजा**', '**सांध्यगीत**', '**दीपशिखा**' और '**यामा**'। 'पद्मश्री' उपाधि से सम्मानित महादेवी वर्मा को '**यामा**' काव्य-संकलन पर 'ज्ञापपीठ' पुरस्कार प्राप्त हुआ था। उनकी गद्य-रचनाओं में '**स्मृति की रेखाएँ**', '**अतीत के चलचित्र**', '**शृंखला की कड़ियाँ**' और '**पथ के साथी**' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। आपकी काव्य-भाषा संस्कृत-निष्ठ खड़ीबोली है, जो कोमलता, मधुरता, गेयता आदि गुणों से संपन्न है।

मुरझाया फूल *शीर्षक कविता में कवयित्री महादेवी वर्मा ने कली के खिलकर फूल बनने से लेकर मुरझाते हुए भूमि पर गिरने तक का आकर्षक वर्णन किया है। कली और खिले फूल के प्रति सब आकर्षित होते हैं, जबकि मुरझाए फूल के प्रति उनका कोई आकर्षण नहीं रहता। यह संसार की स्वार्थपरता है, परंतु इससे बेखबर रहकर फूल अपना सर्वस्व दान करते हुए सबको हरषाता जाता है। यहाँ कवयित्री ने प्रकारान्तर से मानव-जीवन की बात करते हुए महत्वपूर्ण संदेश दिया है।*

मुरझाया फूल

था कली के रूप शैशव
में अहा, सूखे सुमन।
हास्य करता था, खिलाता
अंक में तुझको पवन॥

खिल गया जब पूर्ण तू,
मंजूल सुकोमल फूल बन।
लुब्ध मधु के हेतु मँडराने
लगे, उड़ते भ्रमर॥

स्निग्ध किरणें चंद्र की
तुझको हँसाती थीं सदा
ओस मुक्ता-जाल से
शृंगारती थी सर्वदा॥

वायु पंखा झल रही,
निद्रा विवश करती तुझे।
यत्न माली का रहा
आनंद से भरता तुझे॥

कर रहा अठखेलियाँ
इतरा सदा उद्यान में।
अंत का यह दृश्य आया,
था कभी क्या ध्यान में॥

सो रहा अब तू धरा पर
शुष्क बिखराया हुआ।
गंध, कोमलता, नहीं
मुख-मंजु मुरझाया हुआ॥

आज तुझको देखकर
चाहक भ्रमर आता नहीं।
वृक्ष भी खोकर तुझे
हा, अश्रु बरसाता नहीं॥

जिस पवन ने अंक में
ले प्यार था तुझको किया।
तीव्र झोंके से सुला
उसने तुझे भू पर दिया॥

कर दिया मधु और सौरभ
दान सारा एक दिन।
किंतु रोता कौन है
तेरे लिए दानी सुमन?

मत व्यथित हो पुष्प, किसको
सुख दिया संसार ने?
स्वार्थमय सबको बनाया,
है यहाँ करतार ने॥

विश्व में हे पुष्प! तू
सबके हृदय भाता रहा।
दान कर सर्वस्व फिर भी,
हाय, हरषाता रहा॥

जब न तेरी ही दशा पर,
दुःख हुआ संसार को!
कौन रोएगा सुमन,
हमसे मनुज निस्सार को?

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

अ. सही विकल्प का चयन करो :

(1) कवयित्री महादेवी वर्मा की तुलना की जाती है –

(क) सुभद्रा कुमारी चौहान के साथ

(ख) मीराँबाई के साथ

(ग) उषा देवी मित्रा के साथ

(घ) मन्नू भंडारी के साथ

2. कवयित्री महादेवी वर्मा का जन्म कहाँ हुआ था ?

(क) गाजियाबाद में (ख) हैदराबाद में

(ग) फैजाबाद में (घ) फर्रुखाबाद में

3. महादेवी वर्मा की माता का नाम क्या था ?

(क) हेमरानी वर्मा (ख) पद्मावती वर्मा

(ग) फूलमती वर्मा (घ) कलावती वर्मा

4. 'हास्य करता था, ... अंक में तुझको पवन।'

(क) खिलाता (ख) हिलाता (इ) सहलाता (ई) सुलाता

5. 'यत्न माली का रहा ..... से भरता तुझे।'

(क) प्यार (ख) आनंद (ग) सुख (घ) धीरे

6. करतार ने धरती पर सबको कैसा बनाया है ?

(क) सुंदर (ख) त्यागमय (ग) स्वार्थमय (घ) निर्दय

(आ) 'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर दो :

1. छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा रहस्यवादी कवयित्री के रूप में भी प्रसिद्ध हैं।
2. महादेवी वर्मा के पिता-माता उदार विचारवाले नहीं थे।
3. महादेवी वर्मा ने जीवन भर शिक्षा और साहित्य की साधना की।
4. वायु पंखा झल कर फूल को सुख पहुँचाती रहती है।
5. मुरझाए फूल की दशा पर संसार को दुख नहीं होता।

(इ) पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

1. महादेवी वर्मा की कविताओं में किनके प्रति विरहानुभूति की तीव्रता परिलक्षित होती है?
2. महादेवी वर्मा का विवाह कब हुआ था?
3. महादेवी वर्मा ने किस रूप में अपने कर्म-जीवन का श्रीगणेश किया था?
4. फूल कौन-सा कार्य करते हुए भी हरषाता रहता है?
5. भ्रमर फूल पर क्यों मँडराने लगते हैं?

(ई) अति संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :

1. किन गुणों के कारण महादेवी वर्मा की काव्य-रचनाएँ हिन्दी-पाठकों को विशेष प्रिय रही हैं?
2. महादेवी वर्मा की प्रमुख काव्य-रचनाएँ क्या-क्या हैं? किस काव्य-संकलन पर उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ था?
3. फूल किस स्थिति में धारा पर पड़ा हुआ है?
4. खिले फूल और मुरझाए फूल के साथ पवन के व्यवहार में कौन-सा अंतर देखने को मिलता है?
5. खिले फूल और मुरझाए फूल के प्रति भौंरे के व्यवहार क्या भिन्न-भिन्न होते हैं?

(उ) संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :

1. महादेवी वर्मा की साहित्यिक देन का उल्लेख करो।
2. खिले फूल के प्रति किस प्रकार सब आकर्षित होते हैं, पठित कविता के आधार पर वर्णन करो।
3. पठित कविता के आधार पर मुरझाए फूल के साथ किए जाने वले बर्ताव का उल्लेख करो।
4. पठित कविता के आधार पर दानी सुमन की भूमिका पर प्रकाश डालो।

(ऊ) सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) :

1. कवयित्री महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय प्रस्तुत करो।
2. 'मुरझाया फूल' शीर्षक कविता में फूल के बारे में क्या-क्या कहा गया है ?
3. 'मुरझाया फूल' कविता के माध्यम से कवयित्री ने मानव जीवन के संदर्भ में क्या संदेश दिया है ?
4. पठित कविता के आधारप र फूल के जीवन और मानव-जीवन की तुलना करो।

(ई) प्रसंग सहित व्याख्या करो (लगभग 100 शब्दों में) :

1. 'स्निग्ध किरणें चंद्र की ..... शृंगारती थी सर्वदा।'
2. 'कर रहा अठखेलियाँ ..... या कभी क्या दयान में।'
3. 'मत व्यथित हो पुष्प ..... यहाँ करतार ने।'
4. जब न तेरी ही दशा पर .... हमसे मनुज निस्सार को।'

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग करो :

श्रीगणेश करना, आँखों का तारा, नौ दो ग्यारह होना,
हवा से बातें करना, अंधे की लकड़ी, लकीर का फकीर होना

2. **निम्नांकित काव्य-पंक्तियों को गद्य-रूप में प्रस्तुत करो :**

(क) खिल गया जब पूर्ण तू,
मंजूल सुकोमल फूल बन।
लुब्ध मधु के हेतु मँडराने
लगे, उड़ते भ्रमर॥

(ख) जिस पवन ने अंक में
ले प्यार था तुझको किया।
तीव्र झोंके से सुला
उसने तुझे भू पर दिया॥

3. **लिंग-निर्धारण करो :**
कली, शैशव, फूल, किरण, वायु, माली, कोमलता, सौरभ, दशा

4. **वचन परिवर्तन करो :**
भौंरा, किरणें, अठखेलियाँ, झोंके, चिड़िया, रेखाएँ, बात, कली

5. **लिंग परिवर्तन करो :**
कवयित्री, प्रियतम, पिता, पुरुष, प्राचार्या, माली, देव, मोरनी

6. **कार** शब्दांश के पूर्व **आ, वि, प्र, उप, अप** और **प्रति** उपसर्ग जोड़ कर शब्द बनाओ तथा उन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो।

योग्यता-विस्तार

1. हाव-भाव के साथ प्रस्तुत कविता का पाठ करो।
2. कवि माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित 'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक निम्नोक्त कविता को पढ़ो और अपने गुरुजी की सहायता से इसके संदेश को समझने का प्रयास करो :
'चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँगा जाऊँ।
चाह नहीं, प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ॥

चाहा नहीं, सम्राटों के शव पर हे हरि, डाला जाऊँ।
चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ॥
मुझे तोड़ लेना बनमाली! उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक॥'

3. 'सो रहा अब तू धरा पर
शुष्क बिखराया हुआ
गंध, कोमलता, नहीं
मुख-मंजु मुरझाया हुआ॥'
- रेखांकित काव्य-पंक्ति में आए अलंकार के बारे में अपने-अपने शिक्षक से जान लो।

4. कवयित्री महादेवी वर्मा द्वारा रचित किसी अन्य कविता का संग्रह करके कक्षा में सुनाओ।

5. प्रकृति से संबंधित किसी विषय पर कविता लिखकर अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करो।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

शैशव = बचपन
सुमन = फूल, पुष्प
अंक = गोद
मंजुव = मनोहर, सुंदर
लुब्ध = पूरी तरह लुभाया हुआ, मोहित, लालची
भ्रमर = भौंरा
स्निग्ध = निर्मल
मुक्ता = मोती
शृंगारती थी = शृंगार करती थी
सदा/सर्वदा = हमेशा
निद्रा = नींद
विवश = बाध्य, मजबूर
अठखेलियाँ/ अठखेली = मतवाली चाल, चपलता, चुलबुलापन